सूरह – एक कहानी

सूरह अल-इंसान

इंसान

पूरा सफ़र – बूँद, चुनाव, और चाँदी के प्याले –
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 76 • 31 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

हल अता 'अलल्-इंसानि हीनुम्-मिनद्-दहरि लम यकुन शै-अम्-मज़्कूरा

1. क्या इंसान पर एक ऐसा वक़्त आया जब वो कोई क़ाबिल-ए-ज़िक्र चीज़ न था?

इन्ना हदैनाहुस्-सबील इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफ़ूरा

3. बेशक हमने उसे राह दिखा दी, चाहे शुक्र करे या ना-शुक्री।

व युत्'इमूनत्-त'आम 'अला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा

8. और वो खाना खिलाते हैं, उसकी चाहत के बावजूद, मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को।

इन्नमा नुत्'इमुकुम लि-वज्हिल्-लाहि ला नुरीदु मिन्कुम जज़ा-अंव्-व ला शुकूरा

9. हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए खिलाते हैं, न बदला चाहते हैं न शुक्रिया।

व कान स'युकुम मश्कूरा

22. और तुम्हारी कोशिश की क़द्र की गई।

व मा तशाऊन इल्ला अंय्-यशा-अल्लाह

30. और तुम नहीं चाहते मगर जो अल्लाह चाहे।

एक वक़्त जब आप कुछ थे ही नहीं

बेटा, यह सूरह एक ऐसे सवाल से शुरू होती है जो इतना ख़ामोश और इतना हिला देने वाला है कि ये एक पूरी रात के ग़ौर का हक़दार है: 'हल अता 'अलल्-इंसानि हीनुम्-मिनद्-दहरि लम यकुन शै-अम्-मज़्कूरा — क्या इंसान पर एक ऐसा दौर आया जब वो कोई क़ाबिल-ए-ज़िक्र चीज़ न था?'

इसके बारे में सोचिए। एक वक़्त था — ज़्यादा अरसा नहीं हुआ — जब आप बिल्कुल वुजूद में ही न थे। न एक जिस्म के तौर पर, न एक नाम के तौर पर, न किसी के ज़ेहन के एक ख़याल के तौर पर। दुनिया चलती रही: बाज़ार खुलते रहे, नदियाँ बहती रहीं, लोग हँसते रहे — और आप कुछ भी न थे, बे-ज़िक्र, बे-नाम।

और फिर अल्लाह ने फ़ैसला किया कि आप होंगे। 'इन्ना ख़लक़्नल्-इंसान मिन नुत्फ़तिन अम्शाजिन नब्तलीह — बेशक हमने इंसान को एक मिले जुले क़तरे से

बनाया, ताकि उसे आज़माएँ — फ़-ज'अल्नाहु समी'अम्-बसीरा — तो हमने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।'

बेटा, इस तरतीब को महसूस कीजिए: एक मिले जुले क़तरे से एक ऐसी मख़्लूक़ तक जो सुनती और देखती है। और ग़ौर कीजिए क्यों: 'नब्तलीह' — उसे आज़माने के लिए। आपके कान और आँखें सजावट के तौर पर नहीं दिए गए; ये इम्तिहान का सामान बन कर दिए गए।

और फिर इंसानी आज़ादी की वो असल आयत: 'इन्ना हदैनाहुस्-सबील इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफ़ूरा — बेशक हमने उसे राह दिखा दी — चाहे वो शुक्र-गुज़ार हो या ना-शुक्रा।'

बेटा, अल्लाह ने रास्ता बे-निशान नहीं छोड़ा। उन्होंने अंबिया भेजे, किताबें, उफ़क़ में निशानियाँ, और सीने के अंदर एक ज़मीर। राह दिखा दी गई। और फिर — वो चुनाव की इजाज़त देते हैं। शुक्र-गुज़ार, या ना-शुक्रा। आख़िर में बस यही दो क़िस्में हैं: शाकिर और कफ़ूर। बाक़ी सब कुछ — अमीर या ग़रीब, मश्हूर या गुमनाम, सेहतमंद या बीमार — सिर्फ़ वो माहौल है जिसमें इन दो में से एक जवाब दिया जाता है।

वो खिलाते हैं, हालाँकि उसे चाहते हैं

सूरह मुख़्तसरन ना-शुक्रों का अंजाम दिखाती है — ज़ंजीरें, तौक़ और एक भड़कती आग — और फिर, अपनी ज़्यादातर लंबाई में, एक कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत चीज़ की तरफ़ मुड़ती है: अल-अब्रार, नेक लोगों की तफ़्सीली तस्वीर। और ये तस्वीर उनकी नमाज़ों से नहीं, बल्कि उनके दस्तरख़्वान से शुरू होती है।

'यूफ़ून बिन्-नज़्रि — वो अपनी मन्नतें पूरी करते हैं — व यख़ाफ़ून यौमन कान शर्रुहू मुस्ततीरा — और एक ऐसे दिन से डरते हैं जिसका शर दूर दूर तक फैला हुआ होगा।'

'व युत'इमूनत्-त'आम 'अला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा — और वो खाना खिलाते हैं, उसकी चाहत के बावजूद, मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को।'

बेटा, हर लफ़्ज़ की जाँच कीजिए। वो खाना खिलाते हैं — बचा हुआ नहीं, फ़ुज़ूल नहीं —

"अला हुब्बिही', जब कि वो ख़ुद उसे चाहते हैं और उसकी ख़्वाहिश रखते हैं। यही फ़र्क़ है आम सदक़े और **ईसार** के दरमियान: वो देना जिसे आप ख़ुशी ख़ुशी ख़ुद खा लेते।

और तीन पाने वालों को तरतीब से देखिए: मिस्कीन, ग़रीब शख़्स; यतीम; और — सुब्हानल्लाह — **असीर, क़ैदी**। बेटा, उस दौर में क़ैदी जंग का क़ैदी होता था: वो शख़्स जो उनके ख़िलाफ़ लड़ने आया था, जिसकी क़ौम ने उनके लोगों को मारा था। और क़ुरआन उन मोमिनों की तारीफ़ करता है जिन्होंने उसे खिलाया, उस खाने में से जिसे वो ख़ुद चाहते थे। नबी ﷺ ने सहाबा को क़ैदियों के बारे में हिदायत दी: उनके साथ अच्छा सुलूक करो। बाज़ क़ैदियों ने बाद में बताया कि उनके मुसलमान क़ैद करने वाले उन्हें रोटी दे देते और ख़ुद खजूर खा लेते।

और फिर वो लाइन जो बता देती है कि इस सब में से किसी चीज़ को क़ुबूल क्या चीज़ बनाती है: 'इन्नमा नुत्'इमुकुम लि-वज्हिल्लाहि — हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए खिलाते हैं — ला नुरीदु मिन्कुम जज़ा-अंव्-व ला शुकूरा — हम तुमसे न बदला चाहते हैं न शुक्रिया।'

बेटा, देखिए वो दो चीज़ों से इनकार करते हैं: 'जज़ा' — बदला, कोई भी एहसान वापसी में; और 'शुकूर' — एक शुक्रिया तक। शुक्रिये की छोटी सी अदायगी तक, सराहे जाने का लुत्फ़ तक, वो नहीं चाहते, क्योंकि वो भी एक उजरत है — और वो अपनी फ़ीस पहले ही अल्लाह के साथ तय कर चुके। ये क़ुरआन में इख़्लास के सबसे बुलंद दर्जों में से एक है। अपने आप से पूछिए, बेटा, अगली बार जब आप दें: क्या मैं ये तब भी देता अगर किसी को कभी पता न चलता, और कोई कभी शुक्रिया न कहता?

उनका अज्र, तफ़्सील से

और अब, बेटा, अल्लाह उनके अज्र के दरवाज़े खोलते हैं — और ये पूरे क़ुरआन में जन्नत के सबसे रसीले, तफ़्सीली बयानात में से एक है।

'फ़-वक़ाहुमुल्लाहु शर्र ज़ालिकल्-यौम — तो अल्लाह ने उन्हें उस दिन के शर से बचा लिया — व लक़्क़ाहुम नज़्रतंव्-व सुरूरा — और उन्हें रौनक़ और ख़ुशी अता फ़रमाई।' बेटा, ठीक वही दो चीज़ें जो उन्हें खोने का डर था — सलामती और ख़ुशी — उन्हें दोगुनी

कर के दी गई।

'व जज़ाहुम बिमा सबरू जन्नतंव्-व हरीरा — और उन्हें, उनके सब्र के बदले, एक बाग़ और रेशम अता किया।' ग़ौर कीजिए: उनके सब्र के बदले। वो खिलाना, वो रोज़े, जिसे चाहते थे उसे देना — ये सब सब्र था।

फिर तफ़्सीलात: सजाए हुए तख़्तों पर टेक लगाए हुए; वो न झुलसाती धूप पाएँगे न काटती ठंड; और उसके साये उन पर झुके हुए, और उसके फलों के गुच्छे बिल्कुल नीचे कर दिए गए — फल हाथ की तरफ़ झुक जाता है।

'और उन के दरमियान चाँदी के बर्तन और शीशे के प्याले घुमाए जाएँगे — क़वारीरा मिन फ़िज़्ज़ह — शीशा जो चाँदी का होगा।' बेटा, उलमा यहाँ हैरत में रुक जाते हैं: शीशा शफ़्फ़ाफ़ होता है, चाँदी ग़ैर-शफ़्फ़ाफ़ — और जन्नत में, बर्तन शीशे की सफ़ाई को चाँदी के जिस्म के साथ मिला लेते हैं, एक ऐसी चीज़ जो इस दुनिया ने कभी देखी नहीं। और 'क़द्दरूहा तक़्दीरा' — ठीक उस अंदाज़े तक भरे हुए जो हर शख़्स चाहे। हर घूँट तक ज़ाती तौर पर तय शुदा।

'और उन्हें एक ऐसा प्याला पिलाया जाएगा जिसकी आमेज़िश ज़ंजबील — अदरक — की होगी — एक चश्मे से जिसे सलसबील कहा जाता है।' 'और उनके गिर्द हमेशा रहने वाले नौजवान ख़ादिम घूमेंगे — अगर आप उन्हें देखें तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझें।'

और फिर वो जुमला जिसके लिए ये सारी तफ़्सील रखी गई थी: 'इन्न हाज़ा कान लकुम जज़ा-अंव्-व कान स'युकुम मश्कूरा — बेशक ये तुम्हारे लिए एक बदला है, और तुम्हारी कोशिश की क़द्र की गई।'

बेटा, इस पर रुक जाइए। उन्होंने इस दुनिया में हर शुक्रिया ठुकरा दिया था — 'ला नुरीदु मिन्कुम... शुकूरा' — और अल्लाह उन्हें ख़ुद जवाब देते हैं: 'व कान स'युकुम मश्कूरा' — तुम्हारी कोशिश की क़द्र की गई, उसका शुक्रिया अदा किया गया। जो मख़्लूक़ का शुक्रिया ठुकरा देते हैं, उनका ख़ालिक़ ख़ुद उनका शुक्रिया अदा करता है।

उस के लिए नसीहत जो पैग़ाम उठाता है

फिर सूरह नबी ﷺ की तरफ़ ऐसी हिदायतों के साथ मुड़ती है जिनकी हर मोमिन को एक मुश्किल माहौल में ज़रूरत होती है:

'इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना 'अलैकल्-क़ुरआन तन्ज़ीला — बेशक हमने ही तुम पर क़ुरआन थोड़ा थोड़ा कर के उतारा। फ़स्बिर लि-हुक्मि रब्बिक — तो अपने रब के फ़ैसले के लिए सब्र कीजिए — व ला तुति' मिन्हुम आसिमन औ कफ़ूरा — और उन में से किसी गुनहगार या ना-शुक्रे की बात मत मानिए।'

बेटा, जोड़ी को देखिए: सब्र, और इताअत से इनकार। सब्र का मतलब राज़ी हो जाना नहीं। आप अंदाज़ में नरम और उसूल में ना-क़ाबिल-ए-हिलान एक साथ हो सकते हैं — यही नुबुव्वत वाला तवाज़ुन है।

'वज़्कुरिस्म रब्बिक बुक्रतंव्-व असीला — और अपने रब का नाम सुबह और शाम याद कीजिए — व मिनल्-लैलि फ़स्जुद लहू — और रात में उसके लिए सजदा कीजिए — व सब्बिह्हु लैलन तवीला — और रात के लंबे हिस्से में उसकी तस्बीह कीजिए।'

बेटा, ये है उस शख़्स के लिए ईंधन का इंतिज़ाम जो दबाव का सामना कर रहा हो: सुबह का ज़िक्र, शाम का ज़िक्र, और रात का एक हिस्सा सजदे में। ये मोमिन की ज़िंदगी पर कोई फ़ुज़ूल सजावट नहीं; ये वो बिजली-घर है जो सब्र को मुमकिन बनाता है।

और फिर उन की तशख़ीस जो मुज़ाहमत करते हैं: 'इन्न हाउलाइ युहिब्बूनल्-'आजिलह — बेशक ये लोग फ़ौरी को चाहते हैं — व यज़रून वरा-अहुम यौमन सक़ीला — और अपने पीछे एक भारी दिन छोड़ देते हैं।' बेटा, क्या जुमला है: वो एक भारी दिन अपने पीछे पड़ा छोड़ देते हैं, उसके लिए बे-तैयार, एक न-खुले बिल की तरह।

और सूरह पूरे दीन के तवाज़ुन पर दो आयतों में ख़त्म होती है: 'इन्न हाज़िही तज़्किरह — बेशक ये एक नसीहत है — फ़-मन शा-अत्तख़ज़ इला रब्बिही सबीला — तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता बना ले। व मा तशाऊन इल्ला अंय्-यशा-अल्लाह — और तुम नहीं चाहते मगर जो अल्लाह चाहें।' 'युद्ख़िलु मंय्-यशा-उ फ़ी रहमतिह — वो

जिसे चाहें अपनी रहमत में दाख़िल करते हैं।'

बेटा, दोनों हिस्सों को साथ थामिए: आपका एक असली इरादा और एक असली चुनाव है — 'जो चाहे रास्ता बना ले' — और फिर भी आपका चाहना अल्लाह की मशिय्यत के अंदर होता है। तो सुस्ती का उज़्र देने के लिए कभी मत कहिए 'तक़दीर में यही था', और ग़ुरूर को खिलाने के लिए कभी मत कहिए 'मैंने ख़ुद किया'।

और वो आख़िरी ख़ूबसूरती देखिए, बेटा: वो लोगों को अपनी रहमत में दाख़िल करते हैं — उनके अमल में नहीं। अमल तो रास्ता हैं; रहमत दरवाज़ा है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. वो वक़्त याद कीजिए जब आप 'कोई क़ाबिल-ए-ज़िक्र चीज़ न थे' — वुजूद ख़ुद एक तोहफ़ा है जिसे आपने कमाया नहीं।

2. आपके कान और आँखें इम्तिहान का सामान हैं, सजावट नहीं — और आख़िर में बस दो जवाब हैं: शाकिर या कफ़ूर।

3. वो दीजिए जो आप ख़ुद चाहते हैं ('अला हुब्बिही) — और ग़रीब, यतीम और क़ैदी तक के लिए।

4. फ़ीस पाक कीजिए: न बदला चाहिए न शुक्रिया तक — जो मख़्लूक़ का शुक्रिया ठुकरा देते हैं, उनका ख़ालिक़ शुक्रिया अदा करता है: 'तुम्हारी कोशिश की क़द्र की गई।'

5. जन्नत सब्र के बदले दी जाती है — हर रोकी गई ख़्वाहिश और हर ख़ामोश क़ुर्बानी गिनी जा रही है।

6. अपने सब्र को सुबह-शाम के ज़िक्र और रात के एक हिस्से के सजदे से ताक़त दीजिए।

7. तवाज़ुन थामिए: आप वाक़ई चुनते हैं, फिर भी कुछ उसकी मशिय्यत से बाहर नहीं — और वो लोगों को अपनी रहमत में दाख़िल करते हैं, उनके अमल में नहीं।

या अल्लाह, हमें शुक्र-गुज़ारों में बना दीजिए, हमारे देने को हर पोशीदा फ़ीस से पाक कीजिए, और उस दिन हमें ये सुनाइए: 'तुम्हारी कोशिश की क़द्र की गई।' आमीन।